अध्याय - 1
परिचय

उद्योग रूपरेखा

1.1 भारत में लौह अयस्क का उत्पादन केप्टिव खानों (सार्वजनिक तथा निजी दोनों क्षेत्रों में मुख्यतः उनके अपने प्रयोग हेतु अलग-अलग इस्पात संयंत्रों द्वारा संचालित और उनके स्वामित्व में) तथा गैर-केप्टिव खानों (घरेलू उपभोग तथा निर्यात हेतु) के माध्यम से है। 2010-11 के दौरान देश में लौह अयस्क का कुल उत्पादन 208.11 मिलियन टन (मि.ट.) था। गैर केप्टिव खंड में, सार्वजनिक क्षेत्र में मुख्य कम्पनियां एनएमडीसी लिमिटेड (उत्पादनः 25.16 मि.ट.), उड़ीसा माइनिंग कार्पोरेशन (उत्पादन क्षमताः 5.34 मि.ट.) तथा मैसूर मिनरल्ज़ लिमिटेड (उत्पादन क्षमताः 6.14 मि.ट.) हैं। 25.16 मि.ट. की उत्पादन क्षमता के साथ, एनएमडीसी लिमिटेड (कम्पनी) का अंशदान 2010-11 में भारत में कुल लौह अयस्क उत्पादन का लगभग 12 *प्रतिशत* था। 2011-12 के दौरान, कम्पनी ने 27.26 मि.ट. का उत्पादन किया जो देश के कुल लौह अयस्क उत्पादन जो 169.66 मि.ट. था, के लगभग 16 *प्रतिशत* को निरूपित करता था। एनएमडीसी ने 2010-11 में घरेलू लौह अयस्क की 21 *प्रतिशत* और 2011-12 में 23 *प्रतिशत* मांग पूरी की।

1.2 भारत विश्व में लौह अयस्क का एक अग्रणी उत्पादक है और उसका विश्व के लौह अयस्क उत्पादकों की सूची में चौथा स्थान है। विश्व में 2011 में 2,730 मि.ट. के अनुमानित लौह अयस्क उत्पादन में से, भारत ने 169.66 मि.ट. का उत्पादन किया जो विश्व के कुल उत्पादन का 6 *प्रतिशत* है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा जुलाई/अगस्त 2011 में कर्नाटक के टुमकुर और चित्रदुर्ग ज़िलों में खनन कार्यों पर प्रतिबंध के पश्चात् कर्नाटक में लौह अयस्क का उत्पादन 2010-11 में 37.88 मि.ट. से घट कर 2011-12 में 13.27 मि.ट. हो गया। अप्रैल 2012 तक, कर्नाटक में लौह अयस्क का खनन केवल एनएमडीसी को ही करने की अनुमति थी।

एनएमडीसी, जो 32 एमटीपीए की क्षमता के साथ एक मुख्य खिलाड़ी है, अपनी पांच खानों के माध्यम से उच्च गुणवत्ता के लौह अयस्क का उत्पादन करती है।

***

एनएमडीसी मुख्यतः घरेलू मांग को पूरा करती है। यद्यपि 2011-12 में देश के कुल उत्पादन में एनएमडीसी का हिस्सा 16 *प्रतिशत* था, तथापि वह देश की घरेलू लौह अयस्क की 23 *प्रतिशत* मांग की पूर्ति करती थी।

***

एमएमडीसी ने 2011-12 में ₹ 13,278 करोड़ की आय पर ₹ 10,760 करोड़ का कर पूर्व लाभ अर्जित किया।

कम्पनी रूपरेखा

1.3 एनएमडीसी की स्थापना नवम्बर 1958 में की गई थी जिसका उद्देश्य देश में खनिज संसाधनों का अन्वेषण और उपयोग करना था। इस कम्पनी ने 2 मि.ट. की लौह अयस्क की उत्पादन क्षमता के साथ अपना कार्य शुरू किया और अब उसकी क्षमता, रन ऑफ माईन[1] का 32 मिलियन टन वार्षिक

[1] *रन ऑफ माईन का अर्थ अपशिष्ट को अलग करने के पश्चात् निकाले गए अयस्क से है। इसे बिक्री योग्य उत्पादों जैसे लम्प अयस्क, प्रत्यक्ष रूपान्तरण अंशशोधित लम्प अयस्क, शुद्ध अयस्क आदि से है।*

(एमटीपीए) हो गई है। कम्पनी 1989-90 से लाभ में चल रही है। 2011-12 में इसने ₹ 13,278.38 करोड़ की आय पर ₹ 10,759.70 करोड़ का लाभ (कर पूर्व) अर्जित किया। लौह अयस्क का उत्पादन एवं बिक्री कम्पनी का प्रमुख कार्य है जो 2011-12 के दौरान टर्नओवर का लगभग 99 *प्रतिशत* (₹ 11,167.56 करोड़) था जबकि लगभग एक *प्रतिशत* (₹ 101.17 करोड़) हीरे तथा स्पंज लौह के माध्यम से था। कम्पनी को 2008 में नवरत्न की उपाधि से नवाज़ा गया था।

1.4 कम्पनी मुख्यतः पांच ओपन कास्ट खानों के माध्यम से लौह अयस्क कार्य करती है जो छत्तीसगढ़ में दन्तेवाड़ा ज़िला में **किरन्डुल** और **बचेली** (दोनों की दो-दो खानें) में और एक कर्नाटक में बेल्लारी ज़िला में **डोनीमलाई** में स्थित हैं जिनकी प्रतिष्ठापित क्षमता क्रमशः 12,13 और 7 एमटीपीए है। कम्पनी विभिन्न आकार के बिक्री योग्य लौह अयस्क उत्पादों[2] का उत्पादन करती है। इन सभी खानों में लौह (फी) का तत्व आम तौर पर 64 और 67 *प्रतिशत* के बीच रहता है। मार्च 2012 तक, कम्पनी के ग्राहक आधार में 27 इस्पात बनाने वाले ग्राहक, 65 स्पंज लौह ग्राहक तथा छः दीर्घावधि विदेशी ग्राहक शामिल थे। कम्पनी अपना अयस्क मुख्यतः घरेलू तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्रेताओं के साथ दीर्घावधि करारों (एलटीएज़) के माध्यम से बेचती है। कुछ मात्रा (लगभग पांच *प्रतिशत*) घरेलू तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्पॉट बाज़ार के माध्यम से भी बेची जाती है।

बेलाडिला ओपन कास्ट खानें, छत्तीसगढ़

1.5 लौह अयस्क का खनन, अतिभार अर्थात ऊपरी मिट्टी को हटाने के पश्चात् ड्रिलिंग और ब्लासटिंग के माध्यम से किया जाता है। अयस्क का खनित्रों के माध्यम से डम्परों में लदान किया जाता है और उसे स्थिर क्रशिंग संयंत्र पर ले जाया जाता है। क्रश किए गए अयस्क की संयंत्र में विभिन्न आकारों में स्क्रीनिंग की जाती है और उसे कनवेयर बेल्ट के माध्यम से संबंधित स्टॉक यार्डों में ले जाया जाता है। उसके पश्चात् अयस्क का रेल, स्लरी पाइपलाईन तथा सड़क के माध्यम से ग्राहकों के निर्दिष्ट स्थानों को परिवहन किया जाता है। निर्यात विशाखापत्तनम तथा चेन्नई पत्तनों से एमएमटीसी लिमिटेड, एक केनेलाइज़िग एजेंसी के माध्यम से किए जाते हैं।

---

[2] *लौह अयस्क फाइन्स (6 मि.मी.से कम आकार के) का सृजन लौह अयस्क के बड़े टुकड़ों के खनन, क्रशिंग और प्रोसेसिंग के परिणामस्वरूप किया जाता है। लौह अयस्क फाइन्स को पहले धातुमल में प्रोसेस करना होता है, अन्यथा वह धमन भट्टी में वायु का प्रवाह प्रभावी रूप से बढ़ा देगा। लौह अयस्क लम्प, (आकार 10 मि.मि. से 40 मि.मी.) तभी चुना जाता है जब उसे इस्पात बनाने के लिए धमन भट्टी में डाला जाता है, उसका कण आकार ऑक्सीजन अथवा हवा को कच्ची सामग्री के इर्द-गिर्द घूमने देता है। इसी कारण से लम्प अयस्क की कीमत अधिक होती है। सीधा रूपान्तरण अंशशोधित लम्प (आकार 10 मि.मी. -40 मि.मी.) एक बढ़िया गुणवत्ता का लम्प अयस्क होता है, जिसकी सामान्य कीमत लम्प अयस्क की तुलना में अधिक होती है, जिसे क्रशर से स्क्रीनिंग के पूरा होने के बाद निकाला जाता है जिसमें संदूषक जैसे एल्युमिनियम और सिलिका, लौह अयस्क फीड से हटाए जाते हैं।*

संगठनात्मक ढांचा

1.6 कम्पनी का मुखिया, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (सीएमडी) होता है जिसकी सहायता पांच कार्यात्मक निदेशकों, उत्पादन, तकनीकी, वाणिज्यिक, वित्त एवं कार्मिक द्वारा की जाती है। कम्पनी में दो भारत सरकार नामिती निदेशक और छः से आठ स्वतंत्र निदेशक हैं। खानों के मुखिया कार्यकारी निदेशक/महा प्रबंधक होते हैं जो दैनिक कार्य के लिए निदेशक (उत्पादन)/निदेशक (वाणिज्यिक) को रिपोर्ट करते हैं।

लेखापरीक्षा का कार्यक्षेत्र

1.7 निष्पादन लेखापरीक्षा में कम्पनी के 2005-06 से 2011-12 तक के क्रियाकलाप शामिल किए गए हैं। 2005-06 से 2009-10 तक के वर्षों के लिए लौह अयस्क के उत्पादन, निकास और बिक्री से संबंधित विस्तृत आंकड़ों की लेखापरीक्षा में जांच और विश्लेषण किया गया था।

1.8 विज़ाग एवं चेन्नई में क्षेत्रीय/सम्पर्क कार्यालयों तथा हैदराबाद में कॉरपोरेट कार्यालय सहित कम्पनी की सभी खानों अर्थात छत्तीसगढ़ में चार खानों (दो खानें किरन्डुल में तथा दो खानें बचेली में) तथा कर्नाटक में एक खान (डोनीमलाई) को लेखापरीक्षा में शामिल किया गया था। इसके अतिरिक्त, दो नई खानों (डोनीमलाई, कर्नाटक में कुमारास्वामी डिपॉज़िट, तथा बेलाडिला, छत्तीसगढ़ में डिपाज़िट 11 बी) की भी समीक्षा की गई थी।

1.9 इस्पात बनाने वाले 27 ग्राहकों में से, 19 ग्राहकों, जिन्होंने कम्पनी को ₹ 5 करोड़ तथा अधिक का बिक्री आदेश दिया था, को समीक्षा के लिए चुना गया था। इसके अतिरिक्त 27 स्पंज लौह ग्राहकों को यादृच्छिक आधार पर चुना गया था। हमने सभी छः दीर्घावधि ग्राहकों को किए गए निर्यात की भी समीक्षा की। लेखापरीक्षा में चुने गए इन ग्राहकों को की गई बिक्री का कुल मूल्य ₹ 25,700.08 करोड़ था जो 2005-10 के दौरान हुई कुल बिक्री का 94 *प्रतिशत* था। इसके अतिरिक्त, हमने मूल्य निर्धारण तंत्र तथा अप्रैल 2005 और मार्च 2012 के बीच हुई बोर्ड की 63 बैठकों के कार्यवृत्तों की भी समीक्षा की।

एनएमडीसी की निष्पादन लेखापरीक्षा में चार क्षेत्रों पर ध्यान दिया गया है-(क) लौह अयस्क के क्षमता विस्तार सहित उत्पादन, (ख) निकास सुविधाएं, (ग) बिक्री, और (घ) निदेशक मंडल द्वारा उच्च जोखिम क्षेत्रों की मानीटरिंग

***

लेखापरीक्षा नमूने में सभी पांच परिचालन खानों, दो विकासाधीन खानों तथा 52 (118 में से) ग्राहकों, जो 94 *प्रतिशत* बिक्री निरूपित करते थे, को शामिल किया गया था। इसके अतिरिक्त, मूल्य निर्धारण तंत्र तथा अप्रैल 2005 और मार्च 2012 के बीच आयोजित बोर्ड की 63 बैठकों के कार्यवृत्तों की भी समीक्षा की गई थी।

***

अन्तिम अध्याय में कम्पनी के निष्पादन में और सुधार के लिए लेखापरीक्षा सिफारिशों का सार दिया गया है।

1.10 एंट्री कॉन्फ्रेंस मई 2010 में की गई थी। लेखापरीक्षा ने संबंधित अभिलेखों की जांच की जिनके आधार पर प्रबंधन को प्रारम्भिक आपत्तियां जारी की गई थी तथा जहां मंत्रालय के उत्तर प्राप्त हो गए थे, उनको लेखापरीक्षा निष्कर्ष बनाते समय ध्यान में रखा गया था जिनकी अनुवर्ती अध्यायों में चर्चा की गई है। प्रबंधन के साथ लेखापरीक्षा निष्कर्षों पर चर्चा करने के लिए सितम्बर 2010 में एग्ज़िट कॉन्फ्रेंस की

गई थी तथा प्रतिवेदन को फरवरी 2011 में अन्तिम रूप दिया गया था तथा इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार को जारी किया गया था। इस्पात मंत्रालय का उत्तर मई 2011 में प्राप्त हुआ था।

1.11 जब प्रतिवेदन को अन्तिम रूप दिया जा रहा था, तो कर्नाटक खानों से संबंधित नए तथ्य प्रकाश में आए जिनकी लेखापरीक्षा में फिर से जांच करने की आवश्यकता थी। समीक्षा का प्रारूप फिर से बनाया गया था और प्रबंधन को पुनः जारी किया गया था। लोकायुक्त रिपोर्ट के पश्चात् लेखापरीक्षा आपत्तियों पर प्रबंधन के विचार लिए गए थे। प्रबंधन ने अपने विचार जनवरी 2012 में दिए। प्रतिवेदन को 2011-12 तक मुद्दों को शामिल करने के लिए अद्यतित किया गया था और उसे मंत्रालय को जुलाई 2012 में फिर से जारी किया गया था। इसी बीच अद्यतित प्रतिवेदन पर जुलाई 2012 में हुई एक और एग्ज़िट कॉन्फ्रेंस में प्रबंधन के साथ चर्चा की गई थी। अद्यतित प्रतिवेदन पर मंत्रालय का उत्तर 23 जुलाई 2012 को प्राप्त हुआ था तथा उसे प्रतिवेदन को अन्तिम रूप देते समय समुचित रूप से शामिल कर लिया गया है।

लेखापरीक्षा उद्देश्य

1.12 निष्पादन लेखापरीक्षा का प्रमुख उद्देश्य यह निर्धारण करना था कि क्याः

- निष्पादन प्रतिष्ठापित क्षमता के अनुरूप था;
- क्षमता विस्तार परियोजनाएं परिकल्पित लागतों और समय सीमा के अन्दर कार्यान्वित की गई थी;
- निकास सुविधाएं प्रतिष्ठापित उत्पादन क्षमता के अनुरूप थी;
- कम्पनी की मूल्य निर्धारण प्रणाली बिक्री से अभीष्टतम राजस्व सुनिश्चित करती थी; तथा
- कम्पनी ने प्रचालनों के उच्च जोखिम क्षेत्रों की प्रभावी रूप से मॉनीटरिंग की थी जैसे परियोजना विकास।

लेखापरीक्षा मानदण्ड

1.13 लेखापरीक्षा निम्नलिखित मानदण्डों का प्रयोग करके की गई थीः

- कॉरपोरेट योजना, प्रतिष्ठापित क्षमता तथा वार्षिक योजनाएं;
- बोर्ड एजेंडा एवं कार्यवृत्त;
- परिकल्पित विस्तार योजनाएं
- गणेशन समिति रिपोर्ट;
- लौह अयस्क की अन्तर्राष्ट्रीय स्पॉट कीमतें; तथा
- ग्राहकों के साथ बिक्री ठेके।

आभार

1.14 लेखापरीक्षा, निष्पादन लेखापरीक्षा के विभिन्न स्तरों पर प्रबंधन द्वारा दिए गए सहयोग और सहायता के लिए आभार व्यक्त करता है।

लेखापरीक्षा निष्कर्ष

1.15 निष्पादन लेखापरीक्षा से कुछ ऐसे क्षेत्रों और मुद्दों का पता चला जिनके प्रचालनों का अभीष्टतम परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रबंधन को कार्रवाई करने की आवश्यकता थी। लेखापरीक्षा निष्कर्षों की चार अध्यायों में चर्चा की गई है जिनका विवरण नीचे दिया गया है।

अध्याय 2: उत्पादन में कमी तथा कम्पनी की उत्पादन योजनाओं को प्रभावित करने वाली नई योजनाओं के कार्यान्वयन में विलम्ब को उजागर करता है;

अध्याय 3: लौह अयस्क के लिए निकास सुविधाओं में अवरोधों को उजागर करता है;

अध्याय 4: मूल्य-निर्धारण तथा बिक्री मुद्दों की चर्चा करता है;

अध्याय 5: शासन की कमियां बतलाता है;

अध्याय 6: लेखापरीक्षा निष्कर्ष और सिफारिशों के बारे में बताता है।